INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

April - 2023

E-ISSN – 2348-7143

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue-320

Multidisciplinary Issue

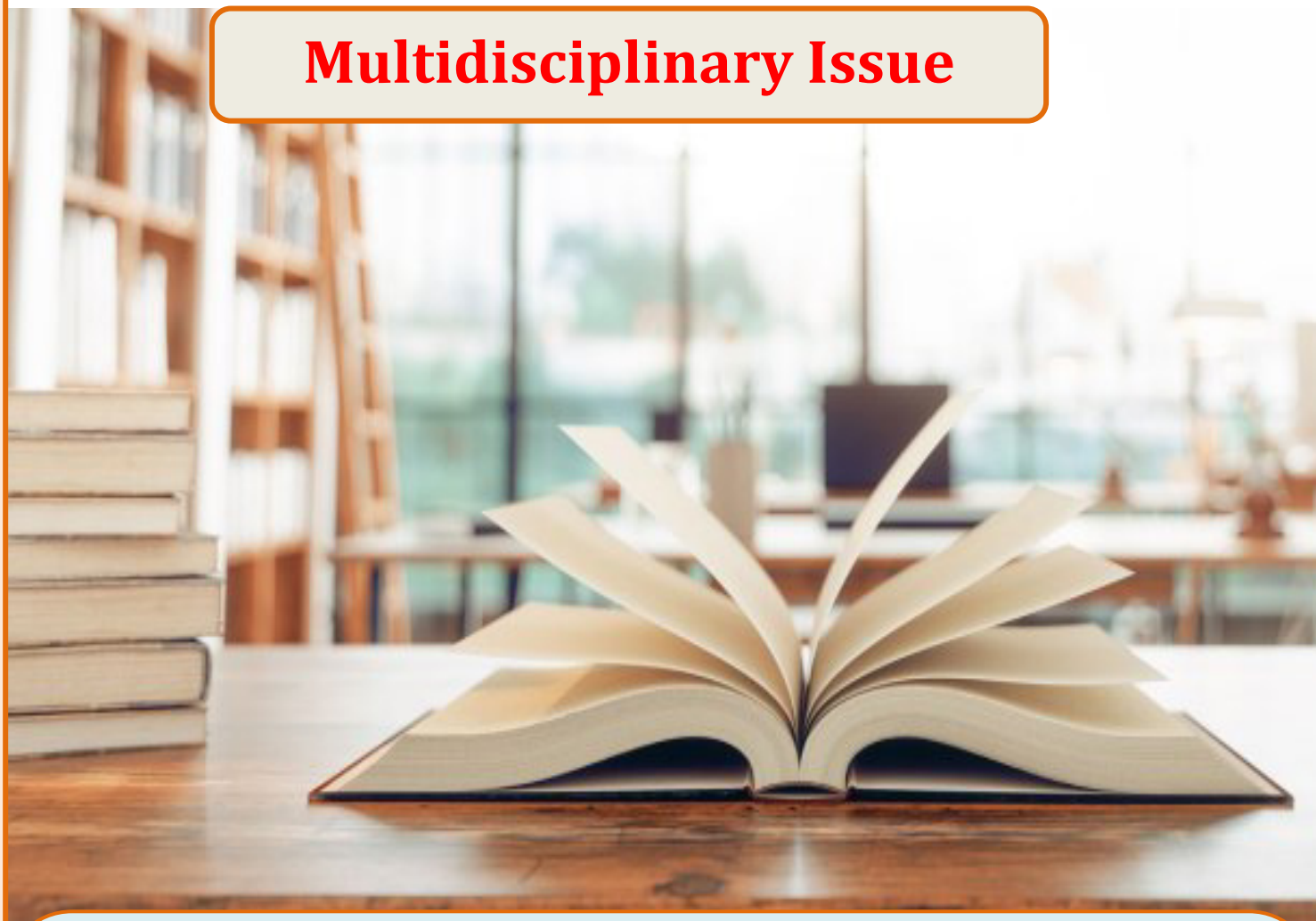

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] India.

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
	English Section		
1	Theme of Disappointment Frustration Loneliness and Transformation in A.K.Abbas's 'The Sparrows'	**Dr. Shrinivas Gadhe**	5
2	Exploring the Theme of Degeneration in Anita Desai's Novels A Study of *'In Custody', 'Clear Light if Day'* and *'Fasting, Feasting'*	**Prof. Kunal Katkade**	8
3	Mass Media and English Literature	**Dr. Mukund Bhandari**	12
4	Social Media Classification Models using Data Mining Techniques: Performance of Decision Tree Algorithm	**Dr. Yogesh Somwanshi**	15
5	A Study of Buying and Selling Practices in Livestock Markets: with Reference to Select Livestock Markets in Jalna District	**Dr. Nilesh Gawade**	20
6	Use of REBT in Cognitive Counseling	**Dr. Kalpana Vitore**	24
7	A Comparative Study of Male and Female Literacy of Maharashtra State	**Ms. Vijaya Sonawane, Dr. Anil Pawar**	27
8	Implementation of RFID Technology in Digital Libraries towards Saving User's Time and for Efficient Security Set Up	**Mr. Ashok Bagul**	31
	हिंदी विभाग		
9	'रश्मिरथी': आधुनिक युग की समस्याएँ	**डॉ. सरोज सोलंकी**	35
10	'भारतीस्तव:' - मातृभूमि का स्तवन	**डॉ. मृदुला काळे**	38
11	राष्ट्रीय चेतना के विकास में बिलासपुर के साहित्यकारोंका योगदान : एक अध्ययन	**अतुल कुमार मिश्रा**	44
12	प्रशांत महासागरीय एल निनो दक्षिणी दोलन (एन्सो) के दायरें में वैश्विक जलवायु : एक विहंगावलोकन	**डॉ. सुभाष दोंदे**	49
13	अकोला क्षेत्र के राजकीय परिवर्तन में शंकरलालजी खंडेलवाल के योगदान का अध्ययन	**निशिकांत देशपांडे, डॉ. धर्मराज पवार**	57
14	भौगोलिक समुद्री सीमा के परिप्रेक्ष्य में भारतीय समुद्री मात्स्यिकी विधेयक २०२१: एक समीक्षात्मक अध्ययन	**डॉ. सुभाष दोंदे**	64
	मराठी विभाग		
15	झाडीपट्टी रंगभूमीचे मूळ दंडार लोकनाट्यात	**डॉ. तीर्थराज कापगते**	71
16	लोकगीतांची भाषाशैली व मूल्यविचार	**विकास बागलावे**	78
17	बुद्ध तत्त्वज्ञान सोप्या भाषेत सांगणारा ग्रंथ - 'बा, तथागता !'	**डॉ. धनराज धनगर**	85
18	श्री ज्ञानदेव चरित्र : एक अभ्यास	**प्रा.अर्चना धारराव (बोराडे)**	95
19	संत तुकारामांच्या अभंगवाणीत आलेले : आदर्श जीवनशास्त्र	**डॉ. निलिमा कापसे**	99
20	महात्मा जोतीराव फुले आणि सत्यशोधक जलसे	**डॉ. जितेंद्र गिरासे**	103
21	महात्मा फुले यांच्या साहित्यातून प्रकट होणारे सामाजिक क्रांतीचे विचार	**डॉ. गणेश चौधरी**	107
22	१९९० नंतरच्या दलित कवितेतील बदलते संदर्भ	**डॉ. विजय केसकर**	115
23	गांधीवादी विचार आणि 'मिरला' कथासंग्रह	**डॉ. संजय पाटील**	125
24	'मौर्चा' काव्यसंग्रहातील सामाजिक जाणिवा	**प्रा. दिनेश गुजर**	132

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue – 320 : Multidisciplinary Issue
Impact Factor 6.625 Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
April-2023

अकोला क्षेत्र के राजकीय परिवर्तन में शंकरलालजी खंडेलवाल के योगदान का अध्ययन

निशिकांत दत्तात्रय देशपांडे
संशोधक छात्र, सरदार पटेल विश्वविद्यालय,
बालाघाट, म. प्र.
ईमेल - nishikantddeshpande@gmail.com
मो.-9850342404

डॉ. धर्मराज पवार
सहायक प्राध्यापक, तथा मार्गदर्शक,
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट, म.प्र.

सारांश (Abstract):

अकोला जिला एवं परिसर के राजनैतीक क्षेत्र में स्व. शंकरलालजी उपाख्य काकाजी खंडेलवाल का बहुत बड़ा योगदान रहा है। १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ। हमारे संविधान ने बहुपक्षीय प्रणाली स्विकार कर लोकतंत्र को सशक्त किया है। किंतु संपूर्ण देश के राजनितीक जगत में प्रारंभ से ही कॉंग्रेस पक्ष का वर्चस्व रहा। अकोला लोकसभा क्षेत्र तथा अकोला विधानसभा क्षेत्र से केवल कॉंग्रेस पक्ष का ही उम्मीदवार विजयी होने की परंपरा रही। प्रखर राष्ट्रवाद एवं हिंदुत्व यही राष्ट्रीयत्व कि भूमिका को लेकर देश के राजनिती जगत में भारतीय जनसंघ का १९५२ में उदय हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारोंसे प्रेरीत भारतीय जनसंघ हर चुनाव लढता था, किंतु अत्यंत कम मात्रा में सफलता मिलती रही। देश का राजनितीक विश्व कॉंग्रेस के प्रचंड प्रभाव में था।

१९८० के दशक में भारतीय जनसंघ का नया रूपांतरण भारतीय जनता पार्टी के नाम से हुआ। आज देश के राजकीय जगत में भारतीय जनता पार्टी का सर्वाधिक प्रभाव है। केंद्र में, राज्योंमे भारतीय जनता पार्टी की ही सरकारे है। १९५२ से १९८९ तक की भारतीय जनसंघ-भारतीय जनता पार्टी की यात्रा अत्यंत संघर्षपूर्ण रही। अविरत त्याग एवं अविचल निष्ठा से अनेक कार्यकर्ताओंने अपने जीवन को समर्पित कर दिया। स्व. शंकरलालजी उपाख्य काकाजी खंडेलवाल का तन-मन-धन पूर्वक समर्पण अचंबित करनेवाला है। अकोला क्षेत्र के राजनितीक विश्व की दिशा बदलने मे स्व. शंकरलालजी खंडेलवाल का अहम योगदान रहा। अकोला जिल्हे में भारतीय जनसंघ-भारतीय जनता पार्टी को स्थापित करना एक कठिन कार्य था, लेकिन शंकरलाल जी ने अपने आप को इस कार्य में खपा दिया। स्व. शंकरलालजीने अकोला क्षेत्र के राजनितीक परिवर्तन में एक बड़ी भूमिका निभाई। प्रस्तुत लेख अकोला क्षेत्र के राजकीय परिवर्तन में शंकरलालजी के योगदान की समीक्षा है।

की-शब्द (Key-words):

शंकरलालजी खंडेलवाल, राजकीय परिवर्तन में योगदान, अकोला क्षेत्र

परिचय (Introduction) :

स्व. शंकरलालजी खंडेलवाल के सामाजिक जीवन का प्रारंभ सन 1937 में राष्ट्री स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से प्रारंभ हुआ। तब उनकी आयु १७ वर्ष की थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के असिम त्याग एवं समर्पण के सिध्दांतोका शंकरलालजी के जीवनपर प्रचंड प्रभाव हुआ। उन्हौने अपना जीवन की संघ विचारोंको केंद्रस्थान में रखकर की। अपने अंतिम श्वास तक वे अकोला जिल्हा संघचालक थे।

शंकरलालजी ने सैद्धांतीक रूप में अपना जीवन व्यतीत किया और समाज के प्रगती के लिए निरंतर कार्य किया। उन्होंने शैक्षिक, आर्थिक, पत्रकारिता, राजनीतिक, चिकित्सा, सामाजिक आदि में अविरत कार्य किया । ईस कार्य सें अकोला क्षेत्र में विद्यालय, महाविद्यालय, अस्पताल, सामाजिक भवन, गौरक्षा प्रकल्प, सेवाप्रकल्प खडे हुये । प्रखर राष्ट्रीयत्व की भावना से स्थापित हुये भारतीय जनसंघ का दायित्व उन्हौने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सुचनासे स्विकार किया। वे सन १९६२ में भारतीय जनसंघ के कोषाध्यक्ष बने । राजनिती क्षेत्र के दायित्व को शंकरलालजी ने अपने असिम परिश्रम, हिम्मत, लगन, सादगी, सेवाभाव एवं प्रामाणिक व्यवहार से उच्चतम तथा आदर्श के क्षितिज पर खडा कर दिया ।

राजकीय क्षेत्र मे एक व्यक्ति अपने कार्य से कितना बड़ा योगदान और परिवर्तन कर सकता है, यह शंकरलालजी के जीवन से सीखा जा सकता है। जनसंघ का दायित्व आने के पश्चात स्व. मांगीलालजी शर्मा के साथ उन्हौने जनसंघ का महाराष्ट्र प्रांत अधिवेशन का अकोला में आयोजन किया। जिससे जनसंघ के कार्य को गती मिली।

शंकरलालजी खंडेलवाल ने अपने नित्य संपर्क से जनसंघ का कार्य अकोला क्षेत्र में खडा करने में परिश्रमोंकी पराकाष्ठा की । आज वर्तमान में जो राजकीय परिदृष्य अकोला क्षेत्र में दिख रहा है, उसमें शंकरलालजी का योगदान अद्‌भुत, अकल्पनीय है । व्यक्ति-व्यक्ति को जोडकर, आर्थिक व्यवस्था से लेकर, कार्यालय तक की पायाभूत व्यवस्था को निर्माण कर शंकरलालजीने जनसंघ-भाजपा की जडे अकोला क्षेत्र में सशक्त कि है । उनके ईस धरातल कार्य को समाज के सम्मुख लाने की आवश्यकता है और इसलिए अकोला क्षेत्र के राजकीय परिवर्तन में स्व. शंकरलालजी के योगदान पर एक समीक्षा लेख लिखने का विचार किया गया ।

सार्वजानिक जीवन की पृष्ठभूमी :

काकाजी के पिता मूल रूप से राजस्थान के रींगस के रहने वाले हैं। जब सूखा और प्लेग आया तो उन्हें गाँव छोड़कर राजस्थान छोड़ना पड़ा और सीधे महाराष्ट्र के बोडवाड पिंपलगाँव देवी आ गए। तब यह सिर्फ एक गांव था। काकाजी का जन्म 1 अगस्त 1920 को इसी गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम भीकमचंद सदारामजी खंडेलवाल और माता का नाम मोहरीदेवी था। काकाजी के पिता स्वाभिमानी थे और किसी कारणवश उनके और उनके भाई-बहनों के बीच गांव में मतभेद हो गए थे। उसने गांव छोड़ने का फैसला किया। वे अपनी पैतृक संपत्ति का कोई हिस्सा लिए बिना सीधे अकोला आ गए। माणकचंद जैन ने घर की तरह उनकी मदद की। चचेरे भाई के भाई और बाद में चाचा को मैट्रिक तक की शिक्षा पूरी करने के बाद नौकरी दी गई। जब काकाजी के लिए विवाह स्थल की व्यवस्था की गई तो उनके पास अपना घर नहीं था। लड़की के घरवालों का सवाल था कि जिस लड़के के पास खुद का घर भी नहीं है, उसे लड़की कैसे दी जाए? तब माणकचंद जैन ने उस घर को काकाजी के नाम पर खरीद लिया और कहा कि यह उनके बेटे का घर है, काकाजी इतने साधारण परिवार में रह रहे थे। उनके परिवार में कोई राजनेता नहीं था। उनकी कोई पारिवारिक राजनीतिक विरासत नहीं थी, वे राजनीति के बारे में ज्यादा नहीं जानते थे, उन्हें अपने परिवार की चिंता थी। कई मुश्किलों को चुनौती देते हुए उन्होंने अपना खुद का बिजनेस शुरू किया। बिना किसी वित्तीय सहायता के, उन्होंने केवल अपने सामाजिक जीवन को साफ-सुथरा रखकर लोगों का विश्वास हासिल किया। काकाजी 1937 के आसपास संघ के संपर्क में आए। भवानीशंकर खंडेलवाल नाम के एक सज्जन पहले काकाजी को संघ की शाखा में ले गए और वहाँ से काकाजी संघ में शामिल हो गए। उनके पिता को यह पसंद नहीं आया होगा लेकिन काकाजी ने टीम

को इतना दिल से लगा लिया था कि उन्होंने इस संबंध में अपने पिता की नाराजगी पर ध्यान नहीं दिया। काकाजी ने जब संघ का काम शुरू किया था, तब समाज का एक बड़ा वर्ग संघ के साथ नहीं था, लेकिन उन्होंने संघ के प्रति निष्ठा और अपनी आस्था के कारण संघ को कभी नहीं छोड़ा, जिसका फायदा उन्हें दूसरी ओर हुआ। बाद में उन्होंने टीम की सारी जिम्मेदारी अपने शरीर पर ले ली, धीरे-धीरे अधिकारियों सहित तमाम लोग उनसे मिलने आने-जाने लगे. इसने टीम वर्क शुरू किया। संघ के नगर संघचालक, जिला संघचालक का उत्तरदायित्व काकाजी पर बहुत देर से आया, पर कोई पद नहीं था पर वे एक स्वयंसेवक की नि:स्वार्थ भावना से उस उत्तरदायित्व को निभाते थे।

राजनीतिक कार्य में योगदान ।:

जब काकाजी पर यह दायित्व आया तब उस समय पूरे विदर्भ में कांग्रेस का दबदबा था। उस विचारधारा को छोड़कर अलग तरह से सोचना मुश्किल था। क्योंकि कांग्रेस ने आजादी की लड़ाई लड़कर देश की आजादी में अपना योगदान दिया था। इसलिए कांग्रेस की लोकप्रियता बहुत अधिक थी। काकाजी को पता था कि अगर कांग्रेस पार्टी ने चुनाव में बिजली का खंभा भी लगा दिया, तो भी वे चुने जाएंगे। लेकिन अगर हम अच्छा काम करते रहे और लोगों को जोड़ते रहे तो उन्हें उम्मीद थी कि संगठन और बड़ा रूप ले सकता है। काकाजी ने संगठन को को मानसिक रूप से आगे बढ़ाया। हालाँकि प्रारंभ में वे स्वयं राजनीति में भाग नहीं लेते थे ।

अकोला में उनसे चर्चा किये बिना जनसंघ के अकोला इकाई में कोई कार्य नहीं हो पाता, इतने वे अविभाज्य घटक बन गये थे । अत्यंत स्वच्छ मन से काम करने वाले काकाजी को जनकल्याण के अलावा कोई व्यक्तिगत अपेक्षा नहीं थी। इसलिए उम्मीदवार तय होने के समय से ही पार्टी के वरिष्ठ नेता उनकी सलाह लेते थे। चुनाव के दौरान आर्थिक, शारीरिक और बौद्धिक हर तरह से काकाजी की बड़ी भागीदारी होती थी। काकाजी ने संघ, जनसंघ और अन्य क्षेत्रों पर ध्यान दिया। क्या चुनाव के दौरान पोस्टर, बैनर और पर्चे की जरूरत पड़ेगी? क्या दीवार पर प्रचार चित्रित किया गया था? ऐसी ही छोटी-छोटी बातों की जानकारी वह कार्यकर्ताओं से लेता रहता था । काकाजी ने अकोला नगरपालिका चुनावों में कांग्रेस और विनय कुमारजी पाराशर प्रणित जनता पार्टी को हराने के लिए 'नागरिक अघाड़ी' सरकार बनाने के लिए सभी कांग्रेस विरोधी दलों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। चुनावों में जनसंघ की लगातार हार के बावजूद काकाजी को कभी किसी ने निराश नहीं देखा। चुनाव परिणाम आने के अगले दिन वे सबसे कम उम्र के कार्यकर्ताओं को बुलाते और उनका आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए उनसे बात करते। काकाजी हमेशा मजदूरों के परिवार के सुख-दुख में शामिल होते हैं। जब काकाजी नगर जनसंघ के कोषाध्यक्ष थे, तब काकाजी चुनाव में सक्रिय रूप से शामिल थे। प्रभात शाखा खत्म होने के बाद कार्यकर्ताओं से मिलने जाते थे। इसके पीछे मकसद यह है कि कार्यकर्ता सुबह से ही संपर्क अभियान शुरू कर दें ताकि मतदाताओं से मुलाकात की जा सके । वह खुद अपने प्रत्याशी के प्रचार के लिए वार्ड व संभाग में घर-घर जाकर मतदाताओं से मिलते हैं. उस समय पुराने शहर के ज्यादातर हिस्सों पर कांग्रेस की जबरदस्त पकड़ थी। दूसरी पार्टियों के कार्यकर्ताओं का वहां घुसना बहुत बुरा है। कई बार कुछ इलाकों में जनसंघ की प्रचार सभाओं पर पथराव भी हुआ। हालांकि, काकाजी का व्यापक जनसंपर्क काम आया, जिसके परिणामस्वरूप जनसंघ को इस क्षेत्र से अच्छे कार्यकर्ता मिले और बाद में इन

कार्यकर्ताओं के भरोसे सभी वार्डों में जनसंघ और जनता पार्टी के नगर परिषद सदस्य चुने गए। इस चुनाव प्रचार में काकाजी के उत्साह को देखकर कोई भी सोचेगा कि वे स्वयं उम्मीदवार हैं । काकाजी ने जनसंघ के कार्य में एक एक व्यक्ति को जोडा । जनसंघ से भारतीय जनता पार्टी तक के पार्टी की यात्रामें काकाजी सक्रिय रहे। अटलजी, प्रमोदजी महाजन, उमा भारतीजी, सुंदरलालजी पटवा, मुरली मनोहरजी जोशी, भैरवसिंहजी शेखावत जैसे पार्टी के कई नेताओं के संपर्क में थे। ये सभी नेता लोग निरंतर काकाजी के आवास पर आते थे । स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के लिए चुनाव था। जनसंघ से मोतीरामजी ला यह चुनाव लड़ रहे थे। माननीय। मोहनजी भागवत संघ कार्यालय में बैठे थे। वह कृषि विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था। चचेरे भाई ने कहा कि वह कृषि विश्वविद्यालय जाना चाहता है। मोहनजी ने पूछा किस लिए चलूं? काकाजी ने कहा, कुछ नहीं, स्नातक निर्वाचन क्षेत्र का चुनाव है और आपको कृषि विश्वविद्यालय में पेश किया जाता है। मोहनजी ने सोचा, हम वहां कैसे जा सकते हैं और हमारे प्रोफेसरों को कह सकते हैं कि इसके लिए वोट करें, इसके लिए वोट करें? मैं ऐसा प्रचार नहीं कर सकता। मैं किसी जनसंघ का कार्यकर्ता नहीं हूं, हम यहां शाखा चलाते हैं। इसलिए ऐसा करना सही नहीं होगा. इस पर काकाजी ने कहा, मैं वह सब जानता हूं। काकाजी के आग्रह के आगे मा मोहनजी का इंकार अधिक देर न टिक सका, मोहनजी को जाना पड़ा। इस घटना से हम काकाजी की राजनीतिक कूटनीति देख सकते हैं।

1968 अकोला नगर पालिका के चुनाव घोषित हुए उस समय जनसंघ ने यह चुनाव नेका निश्चय किया। तब रामदास पेठ, अठार पेठ लेडी हार्डिंग का भाग प्रभाग क्रमांक ७० आता था। यह प्रभाग महिलाओं के लिए और अंत गोषित किया गया था। उस समय काजी एवं शंकरराव समुद्र ये जिला और के प्रमुख थे। इस प्रभाग से खड़े होने के लिए जी ने प्रमिलाताई टोपले का सुझाया। प्रमिलाताई चुनाव में खड़ी हुई। जोशी उनके चुनाव प्रभारी थे। चुनाव के काम का काकाजी सतत मार्गदर्शन करते है। उस समय वसंतराव भागवत महाराष्ट्र के संगठन प्रमुख थे। उन्होंने अकोला आकर कार्यकर्ताओं की सभा ली एवं उसमें चुनाव कैसे लड़े जाते हैं, कैसे काम करना है, यह सब को समझाया। प्रभाग क्रमांक ४० में १७ सौ से अधिक मतदाता थे। करीब करीब २० से २७ कार्यकर्ताओं की टीम कार्यरत थी। प्रत्येक को मतदाताओं के नाम बांट दिए गए। उन्होंने व्यवस्थित प्रयत्न किया और २ बजे बजे तक मतदान समाप्त भी हो गया। प्रभाग में सब जगह काम कैसे चल रहा है इस पर काकाजी बहुत बारीकी से ध्यान रखते थे। काका जोशी के कार्यकर्ता कहीं नजर नहीं आ रहे हैं इसकी उन्होंने काका जोशी से पूछताछ भी की थी। पूरा मतदान हो चुका है जाम यह जानकर काकाजी भी शांत हो गए। काम काकाजी उस ओर बड़ी दक्षता से ध्यान देते । यह बात सभी के ध्यान में आ गई थी। यह चुनाव डॉ. प्रमिलाताई टोपले ने जीत लिया । काकाजी के उत्तम प्रबंधन तथा विश्वासार्हता का यह उदाहण है।

अकोला में कार्यालय बनाने में योगदान:

जब भारतीय जनता पार्टी बनी तो पार्टी की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। इस समय भारतीय जनता पार्टी का अकोला में अलग कार्यालय नहीं था। काकाजीने अपने स्नेही रामनिरंजनजी के भवन में एक ब्लॉक खरीदा और वहां पार्टी कार्यालय बन गया। अकोला में भारतीय जनता पार्टी का पहला कार्यालय काकाजी के कारण ही बन गया । काकाजी ने अकोला में भारतीय जनता पार्टी के निर्माण में एक प्रमुख भूमिका निभाई। काकाजी के चिरंजीव मदनलालजी भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष थे।

विधानसभा चुनाव शुरू हुए तो अकोला से किसे टिकट दिया जाए, इस पर चर्चा शुरू हो गई। मा. गो. वैद्य और बनवारीलाल पुरोहित काकाजी से मिलने आए और बताया कि आपका का नाम सबसे आगे है। क्या आपके परिवार में किसी को दिलचस्पी है? काकाजी ने तुरंत उसके प्रश्न का उत्तर दिया। जब तक मैं हूं, मेरे परिवार में कोई भी किसी राजनीतिक पद पर नहीं रहेगा। उनसे पूछा गया कि क्या वे किसी का नाम सुझा सकते हैं, और उन्होंने मांगीलाल शर्मा के सुपुत्र गोवर्धन शर्मा का नाम सुझाया। उस नाम को पार्टी के वरिष्ठ नेताओं द्वारा अनुमोदित किया गया था। तब से वह छह बार निर्वाचित हुए और विधायक बने। काकाजी ने ठाना तो वे स्वयं पार्षद से लेकर विधायक, सांसद और मंत्री तक आसानी से हासिल कर सकते थे लेकिन राजनीति उनका स्वभाव कभी नहीं था। उन्हौने यही कहा था कि हम राजनीति में कुछ निजी लाभ हासिल करने के लिए नही है हम स्वयंसेवक के नाते राजनीती के क्षेत्र में कार्य कर रहे है । राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे निर्मोही व्यक्ति विरले ही मिलते हैं। सामन्य धारणा है कि राजनीतिक जगत में स्वार्थी लोग ही होते हैं, किंतु राजनीति के दलदल में 'काकाजी' जैसे संवेदनशील, ध्येय के प्रति समर्पित व्यक्तित्व भी होते है । उनके गुणोंका, उनके कार्यों का अध्ययन कर प्रेरणा के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत करना आवश्यक लगता है ।

अकोला नगर-पालिका पार्षद के रूप में योगदान:

काकाजी को राजनीति में ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन 1974 के नगर परिषद चुनाव के लिए उपयुक्त उम्मीदवारों को खोजना मुश्किल था। काकाजी ने अपनी इच्छा के बावजूद संघ की आशा और कार्यकर्ताओं के आग्रह के अनुसार उम्मीदवार बनने की तैयारी की। लेकिन उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं से जोर देकर कहा, हमें ऑफिस नहीं चाहिए, हमें पोस्टर बैनर नहीं चाहिए, हमें जुलूस नहीं चाहिए, इससे काम से ज्यादा टकराव पैदा होंगे । बल्कि हमारे कार्यकर्ता मतदाताओं के घर जाकर व्यक्तिगत रूप से जाकर प्रचार करें। समस्या यह थी कि उस बस्ती के आधे से ज्यादा लोग संघ के स्वयंसेवकों से परिचित नहीं थे, जबकि काकाजी उनके साथ जाते थे और लोगों से बातचीत करते थे.इस चुनाव में लोगों ने काकाजी का पक्ष लिया और काकाजी इस चुनाव में 400 मतों से जीत गए और कांग्रेस के गढ़ में जला था जनसंघ का दीया । यही से जनसंघ के विजय की अकोला में यात्रा प्रारंभ हुयी । नगरपालिका सदस्य चुने जाने के बाद काकाजी की कार्यशैली बहुत सख्त थी। सुबह नियमित रूप से वार्ड का चक्कर लगाना, साफ-सफाई, पानी की व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था का जायजा लेना, वहां के लोगों की समस्याओं को जानना, उनके समाधान के उपाय करना।

इस तरह काम करते हुए उन्होंने बिना किसी साधारण विचार के अपना कार्यकाल पूरा किया, किसी भी तरह का स्वार्थ हासिल करने की तो बात ही छोड़िए। लोगों ने कहा कि एक आदर्श नगरसेवक क्या होना चाहिए, वह काकाजी जैसा है ।

आपात्काल के संघर्ष में योगदान:

25 जून 1975 को पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल की घोषणा कर दी। उस आपातकाल के खिलाफ देश भर में एक बड़ा आंदोलन छिड़ गया था। इस आंदोलन में बड़ी संख्या में संघ के स्वयंसेवकों ने भाग लिया। इससे संघ के स्वयंसेवक पूरे देश में हड़ताल पर थे। चर्चा थी कि काकाजी को अकोला में एक मिसा बंदी के तहत गिरफ्तार किया जाएगा। हालाँकि, काकाजी शांत थे और अपने काम के लिए पुणे

चले गए। जब कुछ लोगों ने वहां पुलिस से संपर्क किया तो उन्होंने कहा कि उन्हें पुणे जाने दो फिर हम उन्हें गिरफ्तार कर लेंगे। पुणे से घर आ गए। परिवार के सभी लोगों की बैठक हुई और सभी ने चाचा की गिरफ्तारी को लेकर अपनी राय रखी. मुलाकात के बाद काकाजी ने तुरंत अकोला के डीवाईएसपी को फोन किया और उनसे कहा, मैं यहां हूं, सर, अब आप मुझे कभी भी लेने आ सकते हैं। अगली सुबह पुलिस की गाड़ी आई और 14 नवंबर 1975 को काकाजी जेल के लिए रवाना हो गए, वे 17 महीने तक नागपुर में रहे। इस कारावास के काल में उन्हौने अनेक लोगों को जोडा ।

समाज के अन्य क्षेत्र के क्रियान्वयन में भूमिका:

काकाजी की अध्यक्षता में अकोला अर्बन बैंक की स्थापना हुयी । काकाजी ने इस बैंक की योजना और स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाई। जब बैंक की शुरुआत हुई थी तब काकाजी को अध्यक्ष चुना गया था लेकिन बाद में रिजर्व बैंक का एक नियम था कि जिस व्यक्ति के पास साहूकार का लाइसेंस हो वह बैंक में किसी पद पर नहीं रह सकता था। काकाजी ने तुरंत बैंक अध्यक्ष के पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ की कभी परवाह नहीं की, वे केवल इतना जानते थे कि उन्होंने जो कुछ भी किया समाज की भलाई के लिए किया। हालाँकि वे बैंक में किसी पद पर नहीं रह सके, लेकिन उन्होंने बैंक के कामकाज पर पूरा ध्यान दिया। कुछ देर बाद बैंक में अफरातफरी मच गई। बैंक के निदेशक मंडल के कुछ गलत निर्णयों के कारण बैंक को भारी घाटा हुआ। जैसे ही उन्हें पता चला कि काकाजी नहीं हैं, उन्होंने एक सभा बुलाई, जिसमें परिवार के नहीं, समाज के अलग-अलग लोगों को बुलाया गया। उनसे चर्चा के बाद सबसे पहले बैंक के कार्यकारी बोर्ड को बदलने का निर्णय लिया गया. उसके लिए वर्तमान अध्यक्ष को त्यागपत्र देने की आवश्यकता थी, ऐसा कहने का साहस काकाजी ही कर सकते थे। काकाजी स्वयं सबके साथ गए और मामले को राष्ट्रपति के समक्ष रखा। वह अपने मामा के सामने कुछ नहीं बोल सका। उन्होंने तुरंत इस्तीफा दे दिया । उसके बाद काकाजी ने कहा कि बैंक का चुनाव निर्विरोध कराया जाए। लेकिन किसी ने उनका विरोध नहीं किया। बैंक के अगले दो चुनाव काकाजी ने निर्विरोध कराये और यह काम उन्होंने पूरी जिम्मेदारी से किया। इससे हम देख सकते हैं काकाजी का नेतृत्व कितना सक्षम था।

निष्कर्ष:

शंकरलालजी खंडेलवाल के जीवन पर उपलब्ध साहित्य से यह तथ्य सामने आया कि अकोला क्षेत्र के राजनितीक जगत में शंकरलालजी का उल्लेखनीय योगदान रहा है। आज अकोला क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी का प्राबल्य हुआ है । सांसद, विधायक से लेकर महानगरपालिका तक अधिकतम लोकसंस्थाओंपर भाजपा के कार्यकर्ता प्रचंड विजयी हो रहे है । यह शृंखला प्रारंभ हुयी काकाजी के असिम परिश्रमसे । राजनीती के क्षेत्र में संघ स्वयंसेवक के रूप में वे कार्यरत रहे । संघ की योजनानुसार काकाजीने जनसंघ से लेकर भाजपा तक की यात्रा में अपना जीवन खपा दिया एवं १९८० की दशक में जब जनसंघ से भाजपा का रूपांतरण हुआ तब संघ की ही योजनानुसार पुनश्च संघकार्य में जुट गये । उस समय से वे राजनिती क्षेत्र के पालक के नाते आवश्यक वहाँ मार्गदर्शन करते रहे । शंकरलालजी निष्ठा, ईमानदारी, नेतृत्व, जिम्मेदारी की भावना, नि:स्वार्थता, त्याग, सादगी, मूल्याधिष्ठीत राजनीती, मानवीय व्यवहार के प्रतिक थे । आज राजनीती का वातावरण कलुषित हुआ है, ऐसे परिदृष्य में काकाजी की राजनीती के क्षेत्र में कार्य करने की शैली प्रेरणादायी तथा दूरगामी परिणाम करनेवाली है, वह जीवनमूल्योंको उजागर करती है ।

सन्दर्भ:

1. देवगांवकर ए, (२०२०), तेथे कर माझे जुळती, संघ समर्पीत काकाजी, हिंदुस्तान प्रकाशन संस्था, (पेज क्र.२५)
2. पाराशर वी. (१९७०), जनसंघ, अकोला नगरपालिका शताब्दी स्मृतिग्रंथ, , विनयकुमार पाराशर अध्यक्ष, अकोला नगर परिषद, (पेज क्र.191 और 231)
3. जोशी डी., (२०१६), विशेष उल्लेख, पोलादी माणसे, पोलाद उद्यमीता प्रतिष्ठान। (पेज क्र.१८-२७)
4. देशपांडे बी., (२०१३), अकोला अर्बन बैंक की स्थापना, संघ हिच जीवनगाथा, उषा देशपांडे, (पेज क्र.16-23)
5. देशपांडे वी, (२००९), काकाजी- एक कृतार्थ जीवन, सुवर्ण पदचिन्ह, शिक्षण प्रसारक मंडल, अकोला, (पेज क्र..21-23)
6. कुलकर्णी एस., (२००५), अकोल्याच्या सामाजिक व राजकीय क्षेत्रातील प्रेरणादायी व्यक्तिमत्व, इमर्जिंग-२००४-०५, शंकरलाल खंडेलवाल महाविद्यालय, अकोला, (पेज क्र.1-2)
7. मराठे वी., (२०२०), संघ निष्ठा, हिंदी विवेक, हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था, (पेज क्र.-५६-५८)
8. जोशी एल., (२०२०), मुक्कम अकोला, गावो-गावी, साहित्य प्रसार केंद्र, (पेज क्र.123)
9. देवगांवकर ए., (२०२०), सुवर्णशिल्पी, संघ समर्पीत काकाजी, हिंदुस्तान प्रकाशन संस्था, (पेज क्र.१२३)
10. देवगांवकर ए., (२०२०), सहकारेण जनकल्याणम, संघ समर्पीत काकाजी, हिंदुस्तान प्रकाशन संस्थान, (पेज क्र.१६३)